किसी भी साधना द्वारा दिव्य प्रेम अप्राप्य है।
बिना किसी साधना के दिव्य प्रेम प्राप्त नहीं किया जा सकता।

प्रथम ये समझना जरूरी है कि हम भगवान से जो प्यार करते है, उस प्यार से मिलन की तड़पन बढ़ती है। ये मायिक प्रेम है। इसके अधीन भगवान नही रहते। इससे मन शुद्ध होता है। उस शुद्ध मन को दिव्य बनाकर उस में दिव्य ईश्वरीय प्रेम डाला जाता है। इस दिव्य ईश्वरीय प्रेम के अधीन भगवान रहते है। इसी प्रेम के बल गोपियाँ भगवान को नचाती थी।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

ये ईश्वरीय प्रेम ईश्वर की एक व्यक्तिगत शक्ति है।
भगवान की कई शक्तियों में से, तीन सबसे महत्वपूर्ण हैं। जीवन(सत) , ज्ञान(चित)और आनंद(ह्लादिनी)।

ह्लादिनी का सार ईश्वरीय प्रेम है। दिव्य होने के नाते, यह अनंत परिमाण का है। यह इतना स्पष्ट है कि किसी भी चीज का आदान-प्रदान करके इसकी मांग नहीं की जा सकती है। जीव के पास सभी परिमित और भौतिक संपत्ति हैं। दिव्य प्रेम पाने के लिए क्या पेशकश की जा सकती है?

भौतिक मन द्वारा जो भी अभ्यास किया जाता है, वह असीम प्रेम नहीं ला सकता है। परिमित हमेशा परिमित तक ही जोड़ देगा। भगवान का प्रेम अपरिमित होता है। कोई भी परिमित तथा मायिक वस्तु अपरिमित तथा दिव्य वस्तु का मुल्य नही हो सकती। इसलिए भौतिक अभ्यास दिव्य प्रेम के लिए मूल्य नहीं हो सकता।

इसलिए ईश्वर प्रेम केवल ईश्वर की कृपा से ही प्राप्त किया जा सकता है और किसी भी प्रकार की साधना से दिव्य प्रेम प्राप्त नही किया जा सकता। इसलिए पहला कथन, किसी भी साधना द्वारा दिव्य प्रेम अप्राप्य है।

यदि ऐसा है तो दिव्य प्रेम किसी को भी स्वतंत्र रूप से उपलब्ध होना चाहिए लेकिन ऐसा नहीं है। आध्यात्मिक अभ्यास बहुत जरूरी है। अभ्यास दिव्य प्रेम नहीं लाएगा, लेकिन मन को शुद्ध करने के लिए अभ्यास आवश्यक है। भगवान की भक्ति के माध्यम से निरंतर आध्यात्मिक अभ्यास से ही मन को साफ किया जा सकता है। एक बार जब मन 100% शुद्ध हो जाता है, तो इसे दिव्य रूप में बदल दिया जाता है और फिर ईश्वर और संत की कृपा से दिव्य प्रेम उपलब्ध होता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

इस प्रकार
किसी भी साधना द्वारा दिव्य प्रेम अप्राप्य है।
बिना किसी साधना के दिव्य प्रेम प्राप्त नहीं किया जा सकता।